आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 279 | ARYA SABHA MAURITIUS | *2nd Dec. to 13th Dec. 2013*

MANAV SHARIR ROUPI YAJYASHĀLĀ

Le corps humain est aussi sacré qu'un temple

Om ! Sapta rishayaha pratihitāha shariré,
sapta rakshanti sadamapramādam.
Saptāpaha swapato lokamiyustatra jāgrito aswapnajow satrasadow cha dévow.

Yajur - Véda 34/35

Glossaire / Shabdartha

Sapta rishayaha – Il y a sept sages (forces vitales ou principes) qui sont toujours actifs dans notre corps.

Dans le contexte de ce mantra – ces sept sages sont nos cinq organes de sens - les yeux, les oreilles, le nez, la langue et l'épiderme, notre esprit, le principe de volonté ('man' en Hindi), et notre intellect- le principe de discernement ('Buddhi' en Hindi).

Shariré – dans notre corps, **Pratihitāha** – qui nous aide à prendre connaissance, à penser, et à agir, **Apramādam** – sans faille, sans omission, Sadam - le soutien de notre corps, **Rakshanti** – ceux qui nous protègent, **Swapataha** – ceux qui dorment, Aapaha - répandre ou disséminer les informations ou s'exprimer, **Lokam** – pour l'âme (ātmā ko), **Iyuha** – est reçu, **Tatra** – Quand on atteint cet état, **Aswapnajow** – Qui n'atteint jamais l'état de rêve, **satrasajow** – celui qui protège les âmes, **Cha** – encore. **Dévow** : Notre force suprême d'inspiration ('prāna' en Hindi) et d'expiration (Apāna en hindi) **Jāgritaha** – reste en état de veille.

Interprétation / Bhawartha

Dans ce mantra du Yajur Véda il y a l'emphase sur les buts spécifiques du Seigneur de la naissance de l'âme munie d'un corps humain.

Le Seigneur nous apprend que le corps humain est accordé par lui aux âmes méritantes pour qu'elles puissent prier, pratiquer les rites ou les cultes religieuses (yajna), s'engager dans des activités spirituelles et humanitaires pour atteindre le but ultime de la vie humaine sur la terre, voire le bonheur éternel / la béatitude ou la libération de l'âme du cycle éternel de la naissance, de la mort et de la renaissance.

Dieu s'attend à ce que nous sachions que le corps humain est aussi pur et aussi sacré qu'un temple. Il faut le traiter avec respect et ne pas le déshonorer par des actes répréhensibles. Il nous incombe tous de le préserver ainsi et de le servir à bon escient pour atteindre le but ultime de la vie.

Dans ce mantra il est dit (en parabole) que dans le corps humain, ce temple sacré, il y a sept prêtres ou sages qui sont éternellement à l'œuvre. Ils officient tous les rites, en d'autres mots, ils gèrent toutes les activités du corps et le protègent sans faille.

Ces sept sages sont nos cinq organes de sens, tels que les yeux, les oreilles, le nez, la langue et l'épiderme, notre esprit ('man'en Hindi) – le principe de volonté, et notre intellect, (Buddhi en Hindi) – le principe de discernement.

Ces sept éléments sont étroitement liés à nos forces vitales ('prāna' en Hindi). C'est ainsi que fonctionnent notre corps quotidiennement. Nous observons, nous faisons des constats, nous réfléchissons, nous agissons et nous acquérons de l'expérience à travers les activités de nos organes de cinq sens, de notre esprit et de notre intellect.

cont. on Pg 4

N. Ghoorah

ओ३म्
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

उद्घाटन समारोह

मान्यवर महोदय / महोदया,

निवेदन है कि आर्य सभा मोरिशस चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उपलक्ष्य में श्रीमती एल० पी० गोविन्दरामेन वैदिक केन्द्र का उद्घाटन करने जा रही है।

स्थान **: एल० पी० गोविन्दरामेन वैदिक सेंटर, यूनियन वेल, त्रुआ बुचिक ।**
तारीख **: ५ दिसम्बर २०१३ ।**
समय **: ३.०० से ६.०० बजे तक ।**

मुख्य अतिथि : **महामहिम राजकेश्वर परयाग, *जी.सी.एस.के., जी.ओ.एस.के*, गणतन्त्र मॉरीशस के राष्ट्रपति।**

विशिष्ट अतिथि : **प्रोफ़ेसर रामप्रकाश, सांसद राज्यसभा, भारत, माननीय मुकेश्वर चुन्नी, कला एवं संस्कृति मन्त्री एवं अन्य गण्यमान्य जन ।**

आप हित, मित्र और परिवार सहित इस समारोह में सादर आमन्त्रित हैं ।
आशा है, अपनी उपस्थिति द्वारा कार्य की शोभा बढ़ायेंगे ।

- निवेदक -

बालचन तानाकूर	हरिदेव रामधनी	विधाता जीउथ
प्रधान	*मन्त्री*	*कोषाध्यक्ष*

सम्पादकीय

ज्ञानप्रिय मानव

मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने वाला प्राणी है। ज्ञान हासिल करने के लिए ईश्वर ने उसे बुद्धि प्रदान की है। वह अपनी बौद्धिक-शक्ति द्वारा तरह-तरह के ज्ञान ग्रहण करने में सफल होता है। किन्तु विश्व में सभी लोग ज्ञानी नहीं होते हैं, कितने व्यक्ति अज्ञानी भी होते हैं। जो ज्ञान-रहित आदमी होते हैं, वे अपनी अज्ञानता के कारण साधारण जनों की श्रेणी में आते हैं, जो ज्ञानविद्ध होते हैं, वे अपने ज्ञान-बल या पाण्डित्य के कारण सर्वत्र पूज्य तथा महान् माने जाते हैं।

सही बात जानने या तत्व की पूरी जानकारी प्राप्त करने को ज्ञान कहते हैं। याने कि जो पदार्थ जिस प्रकार का हो, उसको उसी प्रकार जानना और समझना ज्ञान कहा जाता है। जैसे कि पानी को पानी बोलना, समझना और जानना पानी का ज्ञान है। साफ़ पानी को साफ़ और मैले को मैला कहने की योग्यता पाना साफ़ और मैले का सही ज्ञान है। इसी प्रकार अनेकों उदाहरण हैं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं – आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। ज्ञान ग्रहण करने के लिए साधारण उपाय येहीं पाँच इन्द्रियाँ हैं। जिनके साधनों द्वारा आम आदमी जानकारी हासिल कर लेते हैं। हम किसी प्राणी या पदार्थ का दर्शन करके उसके रंग-रूप आकार, हाव-भाव, लक्षण आदि का ज्ञान पा लेते हैं। अपने कानों से किसी के उपदेश, संदेश या कथन श्रवण करके बहुत विचार प्राप्त कर लेते हैं। किसी प्रकार की ध्वनि सुनकर किसी बात का अंदाज़ा लगा लेते हैं। इसी प्रकार हम किसी के वाचन द्वारा भी सीख कर अनुभवी होते हैं। जीवनकाल में दर्शन, श्रवण और वाचन द्वारा आम जनता ज्ञान ग्रहण करते रहते हैं।

हम सामान्य ज्ञान हासिल करने के लिए त्वचा से स्पर्श करके ठंडा, गरम, मोटा, पतला, कठोर, मुलायम आदि का भी अनुभव पाते हैं। इसी प्रकार नाकों से सूँघकर सड़ी वस्तु का भास होता है, सुगन्ध-दुर्गन्ध का पता लगता है। जीभ से चखकर खट्टा, मीठा, ज़हरीला और कड़ुआ आदि समझ में आ जाता है। पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, सूचनाएँ आदि पढ़कर पठन-शक्ति द्वारा ज्ञान ग्रहण करने का अवसर मिलता है। जो हमारे दैनिक जीवन के लिए अति लाभदायक हैं।

मनुष्य को आंतरिक ज्ञान की भी आवश्यकता होती है। हमारे शरीर के अन्दर मन, बुद्धि अंतःकरण, हृदय और आत्मा का वास होता है। अतः सूक्ष्म शरीर का ज्ञान होना भी जरूरी होता है, ताकि हमारे सोच-विचार, ध्यान एवं मनोभावनाएँ पवित्र हों। आत्मा से सत्य, असत्य, भय, शंका लज्जा आदि का ज्ञान हों। आत्मिक-ज्ञान के माध्यम से ही इन्सान आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द पाने में सफल होता है।

जो व्यक्ति अपने शारीरिक, आन्तरिक, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने में सदा तत्पर रहता है। वह आधि-भौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सुख की कामना करता हुआ ज्ञान-विज्ञान की खोज करता रहता है, क्योंकि वैज्ञानिक युग में आदमी विज्ञान के सहारे अद्भुत और अनोखे कार्य करने में सक्षम दिखाई दे रहे हैं। जीवन पर्यन्त विविध प्रकार का ज्ञान ग्रहण करते रहना और विज्ञान के ज़रिए प्रगति पथ पर अग्रसर होना इन्सान का परम लक्ष्य है, क्योंकि ज्ञान प्रकाश का प्रतीक है ।

मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सही ज्ञान ग्रहण करें और अपनी कर्मेन्द्रियों से शुभ कर्म करें ताकि अपना और जग का भला हो सके। हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि विश्व में सत्य विद्याएँ ग्रहण करने वालों की वृद्धि हो ।

बालचन्द तानाकूर

OM

INTERNATIONAL ARYAN CONFERENCE

(05th to 08th December 2013)

ARYA SABHA MAURITIUS

cordially invites you at the

Opening Ceremony of the Conference

Date **: Thursday 5th December 2013.**
Time **: 15.00 hrs to 18.00 hrs.**
Venue **: Smt. L.P. Govindramen Vedic Centre, Union Vale, Trois Boutiques.**

Chief Guest : **H.E. Mr Rajkeswur Purryag, GCSK, GOSK, President of the Republic of Mauritius.**

Special Guests : **Prof. Ram Prakash, Member of Rajya Sabha, Haryana,India, Hon. Mookhesswur Choonee, Minister of Arts and Culture**

Various eminent personalities will grace the function by their presence.

Your presence will be highly appreciated.

Balchand Tanakoor	Harrydev Ramdhony	Bholanath Jeewuth
President	*Secretary*	*Treasurer*

.....

उद्घाटन समारोह के कार्यक्रम

५.१२.२०१३ (समय ३.०० - ८.००)

Thursday 5.12.13 (15.00 - 20.00)

अध्यक्ष - प्रोफ़ेसर राम प्रकाश, *M.Sc (Hons),Ph.D,D.Sc,* सांसद,राज्यसभा, हरियाना, भारत

२.४५ - ३.०० - ध्वजारोहण
३.०० - ४.०० - वृहद् यज्ञ : डॉ उषा शर्मा, 'उषस्' के आचार्यत्व में वरिष्ठ पंडित-पंडिताओं सहित
४.०० - ४.१० - उद्घाटन समारोह : महामहिम राजकेश्वर परयाग, मॉरीशस गणतन्त्र के राष्ट्रपति
४.१० - ४.३० - संगीत-कार्यक्रम : डी.ए.वी डिग्री कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा
४.३० - ४.४० - स्वागत भाषण एवं सन्देश : श्री बालचन्द तानाकूर जी, प्रधान आर्य सभा मॉरीशस द्वारा ।
४.४० - ४.५० - सन्देश : माननीय मुकेश्वर चुन्नी, कला एवं संस्कृति मन्त्री
४.५० - ५.१० - सन्देश : विशिष्ट अतिथि - प्रोफ़ेसर राम प्रकाश जी, सांसद राज्य सभा, हरियाना, भारत
५.१० - ५.२० - 'स्मारिका' का लोकार्पण एवं सम्मान-प्रदान डॉ० उदय नारायण गंगू, उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस
५.२० - ५.३५ - सन्देश : मुख्य अतिथि महामहिम राजकेश्वर परयाग, मॉरीशस गणतन्त्र के राष्ट्रपति
५.३५ - ५.४५ - कार्य संचालन - सभा मन्त्री, श्री हरिदेव रामधनी जी
५.४५ - ५.५० - धन्यवाद समर्पण - श्री सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधान आर्य सभा
५.५० - ६.०० - संध्या एवं शांति पाठ
६.०० - ६.३० - प्रीतिभोज
६.३० - ८.०० - संगीत सम्मेलन

.....

PROGRAMME

***Opening Ceremony* - Thursday 05.12.2013 (Time : 15.00 hrs – 20.00 hrs)**

***Chairperson* – Prof. Ramprakash, *M.Sc (Hons), Ph.D, D.Sc,* Member of Rajya Sabha, Haryana, India.**

2.45 - 3.00 - Dhwaja Tolan
3.00 - 4.00 - Yajna by Dr. Usha Sharma ji,'Usash' and Pandits & Panditas.
4.00 - 4.10 - Opening Ceremony of Vedic Centre by His Excellency Mr Rajkeshwur Purryag, *GCSK,GOSK, President of the Republic of Mauritius*
4.10 - 4.30 - Sangeet programme by students of D.A.V Degree College.
4.30 - 4.40 - Welcome Address & Message by Shri Balchan Tanakoor ji, *President of Arya Sabha Mauritius*
4.40 - 4.50 - Address by Hon. Mookeshwur Choonee, *Minister of Arts & Culture*
4.50 - 5.10 - Address by Prof. Ram Prakash, *Member of Rajya Sabha, Haryana, India.*
5.10 - 5.20 - The Launching of Special Magazine and Conferment of Honour by Dr. Oudaye Narain Gangoo, *Vice- President, Arya Sabha Mauritius.*
5.20 - 5.35 - Key note Address by the Chief Guest, His Excellency Mr. Rajkeshwur Purryag, GCSK, GOSK, *President of the Republic of Mauritius.*
5.45 - 5.50 - Vote of Thanks by Shri Satyadeo Preethum, *Vice President, Arya Sabha.*
5.50 - 6.00 - Sandhya and Shanti path.
6.00 - 6.30 - Pritibhoj
6.30 - 8.00 - Sangeet Sammelan

Master of Ceremony : Shri Harrydev Ramdhony (15mins)

ओ३म्

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

के उपलक्ष्य में शैक्षणिक सत्र

प्रथम शैक्षणिक सत्र – ६.१२.२०१३ – प्रातःकाल ९.०० बजे से १२.०० बजे तक

शुक्रवार प्रातः ८.३० बजे से ९.०० बजे तक - अग्निहोत्र डॉ० उषा जी शर्मा,*'उषस्'*

मुख्य विषय : **भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में योगदान**

विशिष्ट अतिथि : **प्रोफ़ेसर रामप्रकाश जी,सांसद राज्य सभा, हरियाना, भारत ।**

अध्यक्ष : **प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर,*सी.एस.के,जी.ओ.एस.के* ।**

संचालक : **श्री सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधान आर्य सभा ।**

आलेख प्रस्तुतकर्ता : डा० महेन्द्रस्वरूप - *Nederland*
स्वामी धरमदेव जी - *भारत*
श्री आनन्द मल्लू जी - *मॉरीशस*
पंडित यशवन्त चूड़ोमणि जी - *मॉरीशस*
श्रीमती सौभाग्यवती धनुकचन्द, एम.ए. - *मॉरीशस*
श्री धरमदेव गंगू, एम.ए. - *मॉरीशस*
श्री राजनारायण गति - *मॉरीशस*
श्री प्रह्लाद रामशरण जी - *मॉरीशस*

द्वितीय सत्र – एक बजे से साढ़े तीन बजे तक

विषय : **भारतीय धर्मोपदेशकों द्वारा सुधार-कार्य**

विशिष्ट अतिथि : **माननीय सुरेन्द्र दयाल**

संचालक : **डॉ० उदयनारायण गंगू, उप-प्रधान आर्य सभा**

आलेख प्रस्तुत कर्ता : पंडित धर्मेन्द्र रिकाय - *मॉरीशस*
श्री रवीन्द्र शिवपाल - *मॉरीशस*
डा० रुद्रसेन नीऊर - *मॉरीशस*
श्री राजवीरसिंह शास्त्री - *भारत*
डा० जीतेन्द्र चिकारा - *भारत*
स्वामी आर्यवेश - *भारत*
श्री विश्वपाल जयन्त - *भारत*

चार से पाँच तक संगीत एवं अग्निहोत्र सावान आर्य ज़िला परिषद् द्वारा

तृतीय शैक्षणिक सत्र – शनिवार ७.१२.२०१३

आर्य महिला सम्मेलन

प्रातःकाल ८.३० से ९.०० बजे तक – अग्निहोत्र डा० उषा शर्मा एवं फ़्लाक आर्य ज़िला समिति के यजमानों द्वारा ।

मुख्य अतिथि **: मन्त्री शैला बापू**

विशिष्ट अतिथि **: डा० उषा शर्मा,*'उषस', भारत***
: प्रोफ़ेसर रेशमी रामधनी जी

अध्यक्षा **: श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, *आर्य भूषण***

कार्य संचालिका **: श्रीमती सती रामफल, *आर्य भूषण***

आलेख प्रस्तुत कर्ता : पंडित मानिकचन्द बुद्धू
श्रीमती आर्यवती बुलाकी, *एम.ए.*
श्रीमती विद्यावती कासिया, *बी.ए.*
श्रीमती विजयलक्ष्मी रोशनी, *एम.ए.*
पंडिता सत्यम चमन, *सिद्धान्त वाचस्पति*
पंडिता विद्वन्ती जहाल
श्री योगिराज विश्वपाल जयन्त, *भारत*

चतुर्थ शैक्षणिक सत्र – एक बजे से साढ़े तीन बजे तक

मुख्य अतिथि : **आचार्य आशीष, *भारत***

विशिष्ट अतिथि : **माननीय सुरेन्द्र दयाल, सामाजिक एकीकरण एवं आर्थिक सशक्तिकरण मन्त्री**

अध्यक्षा : **श्रीमती पूनम सुकन तिलकधारी, *प्रधाना आर्य युवक संघ***

कार्य संचालक : **श्री धरमवीर गंगू, एम.ए., *मन्त्री आर्य युवक संघ***

आलेख प्रस्तुत कर्ता : आचार्य वचोनिधि, *भारत*
श्री ब्रह्मदेव माकुनलाल
कुमारी मोहिनी प्रभु
श्री निशान गजाधर
कुमारी प्रवीणा रामधनी
आचार्य विद्यासागर

४.०० से ५.०० बजे तक भजन एवं अग्निहोत्र ग्राँपोर आर्य ज़िला परिषद् के यजमानों द्वारा ।

आयोजक समिति
डॉ० उदय नारायण गंगू

ओ३म्

आर्य सभा मॉरीशस

समापन समारोह – ८.१२.२०१३ (समय ७.०० - १२.००)

Sunday 8.12.13 (07.00 a.m – Noon)

७.०० - ९.०० - रैली - नुवेल फ़्रांस से यूनियन वेल तक

९.०० - १०.०० - यज्ञ की पूर्णाहुति

१०.०० - १०.१० - सन्देश - श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण,* आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान

१०.१० - १०.२० - सन्देश - श्री विनय आर्य, *भारत*

१०.२० - १०.३० - सन्देश - आचार्य आशीष जी

१०.३० - १०.३५ - भजन - डा० उषा शर्मा 'उषस्'

१०.३५ - १०.४५ - स्वामी आर्यवेश, *भारत*

१०.४५ - १०.५५ - प्रस्ताव : डॉ उदय नारायण गंगू, *ओ.एस.के,आर्य रत्न*, उपप्रधान आर्य सभा

१०.५५ - ११.१० - माननीय वसन्त कुमार बनवारी, शिक्षा एवं मानव संसाधन मन्त्री

११.१० - ११.३० - प्रोफ़ेसर राम प्रकाश जी, सांसद सदस्य राज्य सभा, हरियाना, भारत

११.३० - ११.४५ - उपप्रधान मन्त्री माननीय अनिल कुमार बेचू,*जी.ओ.एस.के,* सार्वजनिक मूल ढांचा, परिवहन एवं जहाज़रानी मन्त्री

११.४५ - ११.५५ - कार्य संचालन : सभा मन्त्री - श्री हरिदेव रामधनी, *आर्य रत्न*

११.५५ - १२.०० - धन्यवाद - डॉ रुद्रसेन नीऊर, *जी.ओ.एस.के,आर्य भूषण,* मान्य प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

.....

PROGRAMME

Chief Guest : **Hon. Anil Kumar Bachoo, G.O.S.K, Vice-Prime Minister, Minister of Public Infrastructure, National Development Unit, Land, Transport and Shipping.**

Special Guest : **Hon. Vasant Kumar Bunwaree, Minister of Education and Human Resources**

Closing Ceremony -- Sunday 8.12.13 (08.00 a.m – Noon)

8.00 - 9.00 - Rally : From Union Park round about to Union Vale Vedic Centre

9.00 - 10.00 - Yajna Purnahuti

10.00 - 10.10 - Welcome Address by Shri Balchan Tanakoor, *P.M.S.M, Arya Bhushan* - President, Arya Sabha Mauritius.

10.10 - 10.20 - Address by Shri Vinay Arya, *India.*

10.20 - 10.30 - Address by Acharya Ashish Ji

10.30 - 10.40 - Bhajan by Dr Usha Sharma, *'Ushas'*

10.40 - 10.50 - Address by Swami Aryavesh, *India*

10.50 - 11.00 - Resolution : Dr. Oudaye Narain Gangoo, *M.A, Ph.D, OSK, Arya Ratna,* Vice-President, Arya Sabha.

11.00 - 11.15 - Hon. Vasant Kumar Bunwaree, Minister of Education & Human Resources

11.15 - 11.35 - Address by Prof. Ram Prakash ji, Member of Rajya Sabha, Haryana, India

11.35 - 11.50 - Key note Address by Hon. Anil Kumar Bachoo, *G.O.S.K*, Vice-Prime Minister, Minister of Public Infrastructure, National Development Unit, Land, Transport and Shipping.

11.50 - 12.00 - Vote of thanks - Dr. Roodrassen Neewoor, *G.O.S.K,Arya Bhushan* Honorary President, Arya Sabha Mauritius.

Master of Ceremony : Shri Harrydev Ramdhony, Arya Ratna (15 mins)

Yoga and Youth Camp (Residential)

Arya Sabha Mauritius is organising two Residential Camps under the supervision of Ach Ashish Darshanacharya.

1. **From 10 to 15 December 2013 -** Yoga and Meditation Camp
   Theme : Practical Yoga and Meditation
   Fee : Adults - Rs 500. Students above 15 yrs - Rs 200.
2. **From 17th to 22nd December 2013 –** Youth Camp *(specially for youth aged 14 to 30 yrs)*
   Theme : Total Personality Development
   Fee : Rs 200.

Due to limited number of seats you are requested to make your reservations as early as possible.

Contact persons : Secretary Arya Sabha - Mb. 52557328
Miss Mohini Prabhu - Mb. 57541919
Mrs Aryawati Boolauky - Mb. 57851538

INTERNATIONAL ARYAN CONFERENCE : 2013

S/N	NAMES	AMOUNT (Rs)
	Balance b/f	*95,260.00*
1	**COMPANIES / FIRMS**	
	Secure Works	
	Tropical Services Ltd	5,000.00
2	**MANAGING COMMITTEE - A S M**	
	Shri Rakhal Bissessur	5,000.00
	Smt Ramphul Suttee	3,000.00
	Smt Ramchurn Dhanwantee	1,000.00
	Mr Gowd Ravindrasingh	2,000.00
	Shri Ramdhony Harrydev	3,000.00
	Shri Prabhakar Jeewooth	4,000.00
3	**STAFF - A S M**	
	Mr Sobrun Subiraj	1,000.00
	Ramphul Renuka	2,000.00
	Smt Boodhoo Deorani	2,000.00
	Mr Anil & Mrs Bowan Babita	500.00
	Mrs Hinchoo Anteebye	300.00
	Mrs Sandeea Sinarain	1,000.00
4	**PORT LOUIS A. ZILA PARISHAD**	
	Roche Bois A S	800.00
5	**PLAINE WILHEMS A ZILA PARISHAD**	
	Mon Desir Paillotte AS	800.00
	Vacoas AS	1000.00
	Beau Bassin A M S	3200.00
	Rishi Nagar AS	622.00
	Glen Park AS	1000.00
6	**MOKA A. ZILA PARISHAD**	
	Upper Dagotiere	500.00
	Dubreuil AS & AMS	4025.00
7	**PAMPLEMOUSSES A ZILA PARISHAD**	
	Fond Du Sac AMS - 154	625.00
	Morcellement St Andre A S - 136	1400.00
8	**RIVIERE DU REMPART A. ZILA PARISHAD**	
	Plaine Des Roches A S & A M S	1000.00
	L'Esperance Trebutchet AS & AMS	1325.00
9	**GRAND PORT A. ZILA PARISHAD**	
	Mare D'Albert A S - 2013	9000.00
	La Sourdine A S - 67	3000.00
	Petit Sable A M S - 444	1075.00
10	**FLACQ A. ZILA PARISHAD**	
	Mare La Chaux A S	1000.00
	Grande Retraite A S	1000.00
	Mare La Chaux A M S	1000.00
	Bon Acceuil A S	1000.00
	Riche Mare AMS - Gayetree Bhawan	1000.00
	Shanti Nagar A M S - Quatre Cocos	1000.00
	Palmar A M S	1000.00
	Isidorose A M S	1000.00
	La Queen Victoria A S	500.00
11	**SAVANNE ARYA JILA PARISHAD**	
	Riv. du Poste No. 63	6100.00
12	**DAV COLLEGE PORT LOUIS**	
	Mr Domah Kamal Nayan	5000.00
	Mr K Domah	1000.00
	Mr D Guness	1100.00
	Mrs H Dilchand	1000.00
	Other Staffs	1975.00
13	**DAV MORCELLEMENT**	5,500.00
14	**ARYA PUROHITH PROVIDENT FUND**	
	Arya Purohith Mandal Fund	10,000.00
15	**PUROHITS - A S M**	
	Pta Maheeputh Anjanee	2,000.00
	Pt Reechaye Dharmendra	1,000.00
	Pta Reechaye Vijaye Luxmi	1,000.00
	Pt Fakoo Sateeanand	1,000.00
	Pta Bumma Tarawantee	1,000.00
	Pt Boojhawon Sookchandra	1,000.00
	Pt Sayjadah Satyavrat	1,000.00
	Pta Chummun Satyam & Others	6,300.00
	Pt Sobhun Ramsoondar	1,000.00
	Ach. Oomah Virjanand	1,000.00
	Pta Pratima Mungroo	1,000.00
	Pta Bissessur Parbhawtee	1,000.00
	Pt Jhupsee Heemawath	1,000.00
	Pta Pelladooah Satwantee	1,000.00
	Pt Abeeluck Ghenswar	1,000.00
	Pta Tauckoory Savita	1,000.00
	Pta Rajoo Chandrika	500.00
	Pt Seeraz	1000.00
16	**DR CHIRANJIV BHARDWAJ ASHRAM**	
	Residents of ashram	2,000.00
	SMT L P GOVINDRAMEN -	
	BEAU VALLON AVS	600.00
	Staffs -- Beau Vallon	600.00
17	**MOONSAMY ASHRAM**	
	Members of the Public	1,550.00
18	**MEMBERS**	
	Mr Doorgaprasad Ram	50,000.00
	Members of the public c/o Pta C. Ramchurn	8,200.00
	Members of the public c/o Pt Sobhun	6,300.00
	Members of the public c/o Pt Fakoo S	5,700.00
	Mrs Soonucksingh Chuttoo Raddick	5,000.00
	Dr Domah Chandrabhan	5,000.00
	Members of the public c/o Mrs Ramchurn	4,950.00
	Mr Seetal Dharamraj	3,000.00
	Members of the public c/o Pta Rajoo Chandrika	2,750.00
	Members of the public c/o Pt Fakoo	2,225.00
	Mrs Chandrika Seepergauth	2,000.00
	Members of the public c/o Pta Tauckoory Savita	1,500.00
	Mr & Mrs Nundlall Prabhooduth	1,100.00
	Mr Gopee Premchandra	1,000.00
	Mr Rakhal Balkissoon	1,000.00
	Mr Boodhoo Rajesh	1,000.00
	Mr Peerthy Jayadevi	1,000.00
	Mr Leechoo Deoruttun	1,000.00
	Mr Aukala Raj	1,000.00
	Mr Ramchurn Lutchmeenarain	1,000.00
	Mr Ramchurn V.	1,000.00
	Mrs Ramchurn Shivranee	1,000.00
	Mr Ramchurn Khemduth	1,000.00
	Mrs Busjheet	1,000.00
	Mrs Yallapa Yalinee	1,000.00
	Mrs Dowlut Vidiantee	1,000.00
	Mr La Rose Vikash	1,000.00
	Mr Domun Bhanoo Duth	500.00
	Members of the public c/o Pt Boojhawon	500.00
	Mr Soochit Vinay	500.00
	Mr Cahaneea Dhaneswar	500.00
	Mr Gopaul Nundkissor	500.00
	Mr Jankee Chandrasikarsingh	500.00
	Mr Sayjadah Atish	500.00
	Mr Gajadhur Prem	500.00
	Mrs Gudgadhur Mahima	500.00
	Mr Sookun Raj	500.00
	Mrs Raajnath Sobha	500.00
	Mr Chummun Bhushan	500.00
	Mrs Dussoye Dhanawtee	500.00
	Mr Pelladooah Satianand	500.00
	Mr Jangaleea Chandsing	345.00
	Mrs Seetal Hansranee	300.00
	Shri Dedidin Ramchurn	300.00
	Mr Soochit Sunil	300.00
	Mrs Sayjadah Goowantee	300.00
	Mr Hinchoo Akhil	300.00
	Mrs Boodram	250.00
	Mr D Autar	200.00
	Mr Shyam Maulloo	200.00
	Mr Seetul Ajay	200.00
	Mr Sayjadah Sohani Devi	200.00
	Mr Beeharry Jayduth	200.00
	Mrs Seetal	200.00
	Mr Domah Iswar	200.00
	Mrs Chummun Sangeeta	200.00
	Mrs Seeruttun Omeeta	200.00
	Mr Rungloll Manilall	100.00
	Mr Pradeep Maulloo	100.00
	Mr Pandoo Roshan	100.00
	Mr Seetal Iswar	100.00
	Mr Ramparsad Seenarain	100.00
	Mr Gudgadhur Nishan	100.00
	Mr Dhorow Yash	100.00
	Mr Karuna Gopee	200.00
	Mr Prakash Jeewooth	200.00
	Mrs Nalini Conhyedoss	200.00
	Mrs Kajal Faugoo	200.00
	Mrs Karuna Chuttoo	100.00
	Mrs Sandhya Seedeehul	1000.00
	Total	**344,777.00**

..... to be continued

दीपावली के साथ ऋषि निर्वाण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

१३० वर्ष बीत गए जब से आर्य समाज के संस्थापक महाऋषि दयानन्द ने निर्वाण प्राप्त किया। वह दीपावली की शाम थी, जब यह घटना घटी थी, तबसे आज तक हम स्वामी जी के बताये मार्ग पर चलने वाले वैदिक धर्मावलम्बी दीपावली में स्वामी जी की याद में निर्वाण दिवस मनाते हैं।

क्या मनाते हैं? हम उनके किये गए कार्यों को याद करते हैं। मनन-चिन्तन करते हैं कि यदि वे नहीं आते तो भारत वर्ष देश का, उद्धार नहीं होता। वह देश रसातल में चला जाता इतना गिर जाता कि वहाँ से उठना मुश्किल हो जाता। भारतीय डूब रहे थे। डूबने से न केवल बचा दिया । बल्कि तैरना सिखा दिया।

उन्होंने भारत के लोगों को बता भी दिया कि उस दयनीय दशा से उबरने का रास्ता क्या है? कहा कि वेद की ओर लौटो। वेद को हमने भूला दिया था इस, लिए पतन का मुख देखना पड़ा।

जब आर्य समाज की स्थापना हुई, तब भारतीय मज़दूर गिरमिटिया प्रथा के अन्तर्गत बँधकर गन्नों के खेतों में काम करने के लिए अपनी मातृ-भूमि छोड़कर मोरिशस, फीजी द्वीप समूह, सुरिनाम, ब्रिटिश गयाना, त्रिनिडाड-टोबेगो, दक्षिण अफ़्रीका के नाटाल प्रान्त और अन्यान्य छोटे-बड़े देशों में चले गये थे। वे अपने साथ वही सड़ी-गली कुप्रथा, धर्म के नाम पर ऐसा ऊल-जलूल विश्वास, जिसका न सिर होता था और न पूँछ ढोंग और पाखण्ड, जात-पाँत की घिनौनी प्रथा, अपने पर्वों को मनाने के बेहूदे ढंग और न जाने क्या- क्या लाये थे। इन सब अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए सत्यार्थप्रकाश और स्वामी दयानन्द द्वारा प्रचारित और प्रसारित वेद-उपनिषद की बातें थीं जो अंधेरे से आच्छादित गुफा में आशा की किरण दिखाई देने लगी ।

मोरिशस में बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में गांधी आये । छः वर्ष बाद उनके द्वारा भेजे मणिलाल डॉक्टर आये। उनके द्वारा भेजे डा० चिरंजीव भारद्वाज आये। उनके बाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द आये और प्रगति की कारवाँ चल पड़ी ।

फिर भारत वर्ष में जागरण आया। आर्य समाज की स्थापना के दस साल बाद १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना हुई संस्थापक अवकाश प्राप्त अंग्रेज ओक्टाविये न ह्यूम ने सोचा था अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे भारतीय लोगों को भरमाने के लिए एक संस्था बाँधी जाय, पर आगे चलकर परिणाम उल्टा निकला। स्वामी दयानन्द के द्वारा स्वतंत्रता के मंत्र से प्रभावित होकर देश को स्वतन्त्र करने का जादू चल गया।

पढ़े-लिखे भारतीय नौजवान, अबकी बार खेतों में काम करने वाले नहीं, बल्कि खेतों के बाहर धनार्जन के लिए दुनिया के कोने कोने के प्रगतिशील देशों में जैसे अमेरिका, फ़्रांस, जर्मनी, इंग्गलैण्ड और अन्य देशों में पहुँच गए। आज वहाँ भी भारतीय संस्कृति और धर्म अपने विविध रूप में विद्यमान है ।

आज दुनिया के १२५ तक देशों में दीपावली, होली, रक्षा-बन्धन, ईद वग़ैरह मनाये जाते हैं। न केवल भारतीय मज़दूर जहाँ पहुँचे थे १९ वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में, बल्कि जहाँ भारतीय स्वतन्त्रोत्तर काल में पहुँचे, वहाँ आर्य समाज की पताका फहरा रही है और दीपावली के मौक़े पर ऋषि निर्वाण भी बड़ी श्रद्धां से मनाया जा रहा है।

गणेशी भवन, ब्वा दे ज़ामुरेत आर्य समाज में दीपोत्सव

गत रविवार दिनांक २७ अक्टूबर २०१३ को दो बजे से चार बजे तक गणेशी भवन, ब्वा दे ज़ामुरेत आर्य समाज की ओर से आर्य सभा के तत्वावधान में एवं ग्राँ पोर आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से दीपावली के अवसर पर ऋषि निर्वाण दिवस का भव्य आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पंडित-पंडिताओं द्वारा यज्ञ से किया गया था । यज्ञ और मंगलगान के पश्चात् समाज के प्रधान श्री सोना रामधनी जी ने सभी का स्वागत किया। स्वागत भाषण के बाद आर्य युवक संघ की ओर से आधे घंटे की एक सुन्दर गतिविधियाँ प्रस्तुत की गईं। समाज के गायकों द्वारा भजन हुए। आर्य सभा के प्रधान जी ने संदेश दिया। उन्होंने अपने संदेश में दीपावली के महत्व और महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण पर प्रकाश डाला।

दीपोत्सव की शोभा बढ़ाने के लिए आर्य सभा के प्रधान जी के साथ-साथ, महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी, आर्य सभा के पुस्तकाध्यक्ष - श्री बिसेसर राकाल जी, बालगोबिन्द सेवा आश्रम के प्रबन्धक - श्री सूर्यप्रकाश तोरल जी और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

उस समारोह का समापन्न समाज के मन्त्री श्री अशोक गोरिबा जी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ था।

अन्त में शान्तिपाठ के बाद सभी का मिठाई और पेय पदार्थ से सत्कार किया गया था।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,पी.एच.डी
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,पी.एम.एस.एम
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

बूवा माँग में सरस्वती यज्ञ

बूवा माँग आर्य महिला समाज तथा पुरुष समाज ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी रविवार २९ सितम्बर को दोपहर २.३० बजे स्थानीय मंदिर में सरस्वती यज्ञ का अनुष्ठान किया।

परीक्षा में भाग लेने हेतु अथवा उन्हें परीक्षा सम्बंधी कुछ आवश्यक बातों की जानकारियाँ देने के लिए यह सरस्वती यज्ञ आयोजित किया गया।

यज्ञ के लिए छः कुण्डों की व्यवस्था की गयी थी जिनकी चारों ओर छात्र-छात्राओं ने भक्तिभाव से श्रद्धा पूर्वक आहुतियाँ दीं। लोग भी अपने बच्चों का होसला बढ़ाने के लिए अच्छी तादाद में उपस्थित थे।

उस रोज़ के यज्ञाचार्य पंडित चन्द्रदेव जिनिया ने सरस्वती सूक्त के विशेष मन्त्रों से बच्चों द्वारा आहुतियाँ दिलाई।

इस प्रांत के सांसद पी पी एस श्रीमती प्रतिभा भोला तथा पी पी एस हुकुम ने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की शोभा बढ़ाई। दोनों ने बारी-बारी से समाज के अधिकारियों को इस सुन्दर आयोजन के लिए धन्यवाद दिया और अपने अपने कर-कमलों से बच्चों को शिक्षण सामग्रियाँ तोहफे के रुप में प्रदान कीं।

उस अवसर के विशिष्ट अतिथि डा० ज. लालबिहारी जी ने परीक्षार्थियों को कुछ विशेष परामर्श दिये यथा :

- परीक्षा के समय अच्छी तरह से खाना
- परीक्षा की पूर्व संध्या पर देर तक नहीं जागना।
- पर्चों को अच्छी तरह पढ़कर, समझकर उत्तर देना ।
- सभी उत्तरों को लिखने के बाद अच्छी तरह आवृति करना।

मुख्य अतिथि आचार्य रण्धीर जी ने भी परीक्षाथियों को परीक्षा की तैयारी के विषय में बहुत सी महत्वपूर्ण बातें बताईं।

समाज के प्रधान श्री जिनिया जी तथा मंत्री श्री शंकर जी ने भी सभा को सम्बोधित किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

अंत में शांति-पाठ के पश्चात् सभी लोगों को पेय पदार्थ से सत्कार किया गया। कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

सुधा शंकर
छात्रा - बी.ए.

cont. from pg 1

MANAV SHARIR ROUPI YAJYASHĀLĀ

Même dans l'état de rêve ('swapna awasthā mé' en Hindi) les activités de nos sens de regarder et d'écouter ne cesse jamais, mais dans l'état de sommeil profond ('sushupti awasthā mé' en Hindi) tous les cinq sens, l'esprit et l'intellect, c'est-à-dire, les sept sages/prêtres, malgré leur présence dans le corps, ils se retirent conjointement avec l'âme (ātmā) dans le cœur, passent au repos complet et n'ont aucune connaissance du monde extérieur.

Ici, cela suscite des questions :

Q – Est-ce que, dans l'état de sommeil profond, toutes les activités de notre corps (le yajna) cessent ?

R – Bien sûr que non.

Q – Mais qu'arrivera-t-il si toutes les activités cessent ?

R – Ce sera la mort du corps.

Q - Comment est-ce que la vie ou l'activité du corps continue-t-elle quand les sept sages ne sont pas actifs ?

R – Il y a encore toujours deux autres prêtres (deux éléments ou forces vitales) toujours présents dans notre corps (temple/yajshālā) qui continuent à officier les rites ou à gérer les activités de notre corps. Ces deux éléments sont tout le temps actifs et ne sont jamais affectés par le sommeil. Ils sont le 'prāna' -- force qui nous aide à inspirer l'air dans nos poumons et 'l'apāna' -- force qui nous aide à expirer l'air de nos poumons. C'est-à-dire, la respiration continue pour que notre corps reste en vie.

C'est avec l'aide de ces deux éléments clés que fonctionnent aussi les sept sages – les cinq sens, l'esprit et l'intellect.

En guise de conclusion, pour notre salut et pour le salut de l'humanité toute entière, le Seigneur nous exhorte à traiter nôtre corps physique comme un temple sacré, de le garder toujours pur et sain par nos pensées, nos dévouements, nos bonnes actions et notre spiritualité.

Addendum

Selon les enseignements des Védas, Dieu a créé 8.4 millions espèces de créatures sur la terre. On peut les classer en trois catégories distinctes : animale, végétale et humaine.

Parmi toutes ces créatures, l'espèce animale et l'espèce végétale sont de classes inférieures et ne vivent que de leurs instincts et n'évoluent jamais. Elles ne peuvent jamais atteindre la félicité éternelle. ('Moksha' en Hindi)

Cependant, l'espèce humaine (l'homme) est de loin supérieure aux autres. L'homme est la seule créature qui est dotée de l'intelligence et d'un langage articulé, c'est-à-dire, de la parole. Lui seul peut se rapprocher de Dieu par l'acquisition de la connaissance du monde matériel ('Aparā Vidyā' en Hindi) et du monde spirituel ('Parā Vidyā' en Hindi), par ses bonnes actions, et sa dévotion – en d'autres mots par 'Gyan', 'Karma', aur 'Upāsanā' en Hindi.

Ce n'est que par ce moyen que l'homme peut atteindre la béatitude ou la félicité éternelle ('Moksha' en Hindi) qui est à sa portée seulement, pas aux autres espèces.

Après la mort d'un être humain, son âme délaisse son corps matériel et si elle n'atteint pas la béatitude (Moksha) elle assume un nouveau corps. C'est ce qu'on appelle la réincarnation.

Dans ce processus, c'est Dieu, notre Seigneur Tout Puissant et Omniscient, qui est le juge Suprême et c'est lui qui décide. Il se peut que l'âme, de par ses mérites (Karmā), renaisse dans l'espèce humaine, La créature de classe supérieure, ou dans l'espèce animale ou végétale – les créatures des classes inférieures.

Atteindre le corps humain, dans le cycle éternel de la naissance, de la mort et de la renaissance, est la plus haute distinction, ou récompense accordée par le Seigneur à l'âme méritante car cela lui ouvre la voie à la félicité éternelle ou à la béatitude.

Ainsi il est évident que le corps humain est précieux et pur. Le salut de toutes les âmes se trouve dans le corps humain car c'est le seul moyen d'atteindre le but ultime de la vie de l'homme sur la terre -- la Béatitude ou 'Moksha' en Hindi.